राष्ट्र एवं धर्म प्रेमी बनो !

भूमिका

'मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम और सीताजीकी इस भूमिकी प्रजा कर्तव्यदक्ष है । यहां पराक्रमके रामायण रचे जाएं । यह देखकर हिमवान पर्वतोंके सिर गौरवसे ऊंचे हों और जबतक चंद्र-सूर्य हैं, भारतकी स्वतंत्रता अबाधित रहे ।'

मराठीके अग्रणी कवि श्री. ग.दि. माडगूळकर द्वारा स्वतंत्रताके विषयमें व्यक्त यह भावना कितनी उदात्त है ! स्वतंत्रता पूर्व कालमें राष्ट्रपुरुष एवं क्रांतिकारियोंने अपने प्राण देशपर न्योछावर नहीं किए होते, तो क्या आज हम विश्वमें 'स्वतंत्र' देशके नागरिकके रूपमें सिर ऊंचा कर जी रहे होते ?

कहते हैं, 'बच्चे देशका भविष्य होते हैं' । देशका भविष्य इस बातपर निर्भर होता है कि उसके बच्चोंकी जिह्वापर कौन-से गाने होते हैं ! पूर्वकालमें बच्चोंकी जिह्वापर 'गीताके श्लोक' अथवा 'रामचरितमानस' की चौपाइयां हुआ करती थीं; किंतु आजकल, 'पॉप' गाने होते हैं ! आज व्यायामशालाएं बंद होती जा रही हैं; क्योंकि वहां व्यायाम करनेवाले युवक नहीं जाते । सर्वत्र 'डान्स क्लास' खुलते जा रहे हैं ! राष्ट्रपुरुष एवं क्रांतिकारी नहीं, चलचित्रके अभिनेता एवं खिलाडी बच्चोंके आदर्श बनते जा रहे हैं ! वास्तवमें हम राष्ट्र एवं धर्म के प्रति कितना गर्व अनुभव करते हैं ? केवल विद्यालयोंमें राष्ट्रगीत गाने एवं त्यौहार-उत्सवों में देवताको नमस्कार करनेसे यह अभिमान नहीं उत्पन्न होता । इसके लिए मनमें राष्ट्र एवं धर्मके प्रति प्रेम उत्पन्न होना आवश्यक है ।

बच्चो, केवल ऊंची शिक्षाके बलपर नौकरी करने एवं सत्यनिष्ठा से जीवन जीनेका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम 'आदर्श नागरिक' बन गए हैं । आज इतने वर्षोंके पश्चात भी छत्रपति शिवाजी

महाराजसमान राष्ट्रपुरुष और समर्थ रामदासस्वामीसमान धार्मिक पुरुष सबकी स्मृतियोंमें बस गए हैं । क्योंकि, उनका जीवन आदर्श था । वे आदर्श इसलिए हैं; क्योंकि, उनका जीवन राष्ट्र और धर्म के लिए समर्पित था । बच्चो, आपको भी लगता होगा न कि अन्य लोग आपको 'आदर्श' मानें ? इसके लिए आपको राष्ट्र एवं धर्म प्रेमी बनना पडेगा । यह ध्येय साध्य करनेके विषयमें अत्यंत सरल मार्गदर्शन इस ग्रंथमें किया गया है ।

आज हमारे देशमें आतंकवाद, भ्रष्टाचार, दरिद्रता, उद्योगहीनता (बेकारी), महिलाओंपर अत्याचार आदि अनेक समस्याएं हैं । नेतागण भारतको अमेरिका, चीनके समान महासत्ता बनानेकी घोषणा करते हैं । हम भी यह स्वप्न देखते हैं । किंतु, महासत्ता होनेपर भी अमेरिका तथा चीनमें चोरियां, भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, हत्याएं, लूटपाट इत्यादि हैं । वहां पैसा एवं सामर्थ्य तो है; किंतु आनंद नहीं ! हमें कैसा राष्ट्र चाहिए ? समर्थ रामदासस्वामीद्वारा वर्णित, छत्रपति शिवाजी महाराजद्वारा स्थापित 'हिन्दवी स्वराज्य' जैसा –

सभी पापियों का संहार हुआ । हिन्दुस्थान संपन्न हो गया ।
अधर्मियोंका नाश हुआ और धरापर आनंद छाया ।

वनमें, भुवनमें, सर्वत्र आनंद ही आनंद ! सारी प्रजाको आनंद देनेवाल ा राज्य शिवाजी महाराज कैसे स्थापित कर सके ? इसका एक कारण है, बाहुबल एवं दूसरा है धर्मबल । समर्थ रामदास स्वामीसमान संतोंने शिवाजी महाराजको आशीर्वाद दिए थे । क्योंकि, वे धर्मका आचरण करते थे । वे धर्मका आचरण करते थे; इसलिए, उनकी प्रजा भी धर्मका पाल न करती थी । परिणामस्वरूप 'हिन्दवी स्वराज्य' सर्व दृष्टिसे आदर्श एवं आनंदमय राज्य था ।

बच्चो, आपने यदि राष्ट्रपुरुष, संत एवं राम-कृष्ण समान देवताओंको अपना आदर्श मानकर धर्माचरण किया, नैतिक मूल्योंको अपनाकर शिक्षा ग्रहण की तथा उस शिक्षाका उपयोग राष्ट्र एवं धर्म की सेवाके लिए किया, तो निश्चित ही भारतमें हिन्दू राज्य' (आदर्श राज्य) स्थापित होगा । ऐसा 'सुराज्य स्थापित करना' ही आपका वास्तविक 'करियर' होना चाहिए, यह ध्यानमें रखिए !

इस ग्रंथको पढकर सभी जन धर्माचरण करने लगें एवं राष्ट्रभक्त बनें तथा उन्हें राष्ट्र एवं धर्म के प्रति कर्तव्य पालन हेतु प्रेरणा मिले, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना ! - **संकलनकर्ता**

सनातनकी ग्रंथ-निर्मितिके कार्यमें सम्मिलित होकर समष्टि साधना करें !

१. मराठी भाषाके ग्रन्थोंका संकलन करना,

२. मराठी, हिन्दी एवं अंग्रेजी ग्रंथोंका विविध भाषाओंमें भाषांतर करना एवं

३. ग्रंथोंकी संरचना 'इनडिजाइन' संगणकीय प्रणालीमें करना,

इन कार्योंमें सम्मिलित होने हेतु संपर्क करें - (0832) 2312334

राष्ट्राभिमानी, संस्कृतिभिमानी व धर्माभिमानी पीढी निर्माण करनेवाली कार्यशाला !

सनातन संस्कारवर्ग (आयुवर्ग : ६ से १० वर्ष एवं ११ से १६ वर्ष)

- शास्त्रोक्त भाषामें धर्मपालनकी सीख !
- दोष-निर्मूलन / गुणवृद्धि हेतु मार्गदर्शन !
- स्वभाषा, स्वभूषा आदि संबंधी अनमोल ज्ञान !

अनुक्रमणिका

[कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।]

१. बच्चो, राष्ट्र एवं धर्म संबंधी कर्तव्य समझ लो ! १५

* राष्ट्रके लिए जीनेवाले क्रांतिकारी बालकोंका ही इतिहास पढें ! १५
* राष्ट्र एवं धर्म के प्रति कर्तव्य आयुके बंधनके परे होना ! २०

२. स्वभाषाभिमान राष्ट्राभिमान / धर्माभिमान का आधार है ! २०

* मातृभाषासे होनेवाले लाभ २२
* मातृभाषामें शिक्षा न लेनेसे होनेवाली हानि २५
* देववाणी भाषा 'संस्कृत' एवं उसका महत्त्व ३५

३. स्वदेशी अपनाएं, राष्ट्राभिमान बढाएं ! ३७

* विदेशी वस्तुओंके प्रयोगसे हो रही भारतकी अपरिमित हानि ३८
* स्वदेशीको प्रोत्साहित करनेवाले राष्ट्रपुरुषोंका आदर्श लें ! ३९

४. राष्ट्राभिमान बढानेके लिए निम्नांकित कार्य कीजिए ! ५०

* राष्ट्रपुरुषोंकी जीवनी पढकर राष्ट्राभिमानी बनें ! ५१
* पाठ्यपुस्तकोंमें दिए गए असत्य इतिहासका विरोध करें ! ६३
* खरा वैभवशाली इतिहास समझ लें ! ६५

५. धर्मप्रेम बढाएं और धर्माभिमानी बनें ! ६८

* धर्मका महत्त्व * धर्माचरणके कुछ दैनिक कृत्य ६७

६. राष्ट्रहित एवं धर्महित साध्य करनेके लिए यह भी करें ! ९१

* पटाखोंसे होनेवाली राष्ट्र एवं धर्म की हानि रोकिए ! ९३
* 'मोबाइल'से राष्ट्र और धर्म संबंधी एस.एम.एस. भेजें ! ९७

७. राष्ट्ररक्षा एवं धर्मजागृति के आंदोलनोंमें भाग लें ! ९९